स्व वृत्त

15 सितम्बर 1956 को डिण्डौरी (मण्डला) के ग्राम सुकुलपुरा में जन्में सुमरन धुर्वे जी ने राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपनी लोककला से परिचय कराने वाले लोककलाकार, लोककला मर्मज्ञ पद्म श्री स्व. शेख गुलाब के सानिध्य में रहकर अपनी कला को प्रदेश व देश के अनेक मंचों पर प्रस्तुत कर प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। आप 1970 से 1982 तक शेख गुलाब के नेतृत्व में गणतंत्र दिवस की परेड में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करते रहे। श्री धुर्वे ने 1982 में बस्तर के लाककलाकारों को प्रशिक्षित कर नवम् एशियार्ड में सफल प्रदर्शन किया। इसी तरह वर्ष 81, 82 व 83 में दिल्ली के व्यापार मेले, चित्रकूट में 80–81 रामायण मेले में मध्यप्रदेश लोककला दल का नेतृत्व किया। आपने राष्ट्रपति वी.वी. गिरी से लेकर अब तक सभी राष्ट्रपतियों के समक्ष अपनी कला का प्रदर्शन किया है। दिल्ली दूरदर्शन भी इनके नृत्य व वादन का प्रसारण कर चुका है।

हालांकि जबलपुर में आपकी ससुराल है तथापि 1989 में श्री आनंद चौबे द्वारा लोकनृत्य संस्कार शिविर के प्रशिक्षक के लिये आमंत्रित किये जाने के बाद आपने नगर में कला यात्रा से अपनी पहचान बनायी है। श्री धुर्वे तभी से विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से प्रतिवर्ष ग्रीष्मकालीन शिविर संचालित करते रहे हैं। आपके द्वारा प्रशिक्षित छात्र–छात्राओं ने राष्ट्रीय स्तर पर नगर व प्रदेश को गौरवांन्वित किया है।

वर्तमान में इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ में संगतकार पद पर कार्यरत श्री सच्चे अर्थों में पद्म श्री शेखगुलाब के शिष्य हैं।

(सुमरन धुर्वे)